M. A. Semester - I
Philosophy CC-03

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Aristotle Criticism of Plato's Theory of Ideas
(Part - II)

अतः इस खण्डन को विस्तृत तथा समुचित रूप से समझ लेना आवश्यक हो जाता है। मुख्य रूप से Plato के विज्ञानवाद पर Aristotle द्वारा उठायी गई आपत्तियाँ निम्नलिखित है—

सर्वप्रथम हम यह पाते हैं कि Plato के अनुसार विज्ञान अर्थात Idea या Forms सामान्य है। सामान्य से Plato का तात्पर्य है कि सामान्य अपनी जाति के विशेषों में अनुगत रहते हैं और उनको अन्य जाति के विशेषों से अलग करते हैं। ~~और उनको अन्य~~ सामान्य को Plato ने केवल हमारी बुद्धि की कल्पना नहीं माना है परन्तु यह सामान्यों को वास्तविक पदार्थ माना है। यहाँ इसकी स्थिति भारतीय दर्शन के न्याय-वैशेषिकों के समान हो जाती है। यह तो ठीक है लेकिन Plato साथ-साथ यह भी मानता है कि सामान्यों का अलग संसार है। यह मानता है कि ~~सामान्य~~ वस्तुजगत के पदार्थ अनित्य और असत्य है, किन्तु ये सामान्य नित्य और सत्य है। किन्तु Aristotle मानते हैं कि ऐसा मानना Plato की भूल है क्योंकि विशेषों से अतीत 'सामान्य' एक अवास्तविक और अमूर्त (Abstract) की कल्पना है। सामान्य सरल और नित्य वस्तु होते हुए भी जगत में पदार्थों से अलग नहीं रहते। वास्तव में वे विशेष व्यक्तियों या पदार्थों में ही अनुगत रहते हैं।

पुनः Aristotle आलोचना के सन्दर्भ में बतलाया है कि यदि सामान्यों को विशेष माना जाए तब फिर उन वस्तुओं को भी, जिन्हें हम द्रव्य नहीं कहते, सामान्य मानने पड़ेंगे और ऐसी अवस्था में

फिर हमें अभावों एवं सम्बन्धों को भी सामान्य मानना होगा जो कि अनुचित प्रतीत होता है।

फिर अपने आलोचना के सन्दर्भ में Aristotle ने बतलाया है कि Plato का विज्ञान जगत् और कुछ नहीं वरन् वस्तु-जगत् की निरर्थक पुनरावृत्ति मात्र है। Aristotle का कहना है कि Plato ने सामान्यों की स्थापना वस्तुओं की सत्ता और उनके स्वरूप की संगति बनाने के लिए की थी। संसार के विभिन्न पदार्थ अपने-अपने सामान्य के हैं कारण सत् प्रतीत होते हैं। विभिन्न मनुष्यों में "मानवता" का सामान्य अनुभूत है और विविध अश्वों में अश्वत्व का।

किन्तु यहाँ पर Aristotle का कहना है कि Plato इसे भूल गये हैं और उन्होंने सामान्यों अथवा विज्ञानों के संसार को इस संसार से सर्वथा पृथक् कर दिया और ऐसी दशा में सामान्यों या विज्ञानों का जगत् हमारे वस्तु-जगत की पुनरावृत्ति बन गया है। हमारे जगत् में जितने भी पदार्थ हैं उन सबके सामान्य विज्ञान जगत् में है। वस्तु जगत् में विभिन्न मानव अश्व, मेज, कुर्सी आदि है जो अनित्य है और इन्हीं वस्तुओं के नित्य मौलिक रूप "सामान्य मानव" "सामान्य अश्व" "सामान्य मेज" आदि दिव्य जगत में है। वस्तुतः इस निरर्थक पुनरावृत्ति से कोई लाभ प्रतिफलित नहीं होता और इसी कारण Aristotle ने Plato की उपमा उस व्यक्ति से दी है जो कुछ समस्याओं की गणना करने में असमर्थ होने पर सोचता है कि यदि वह प्रस्तुत संख्याओं को दुगुनी कर दे तो वह इनकी गणना आसानी से कर पायेगा, जो बिल्कुल असम्भव है।

पुनः Aristotle ने Plato के विज्ञानवाद के विरुद्ध एक आक्षेप लगाते हुए कहा है कि Plato के अनुसार विज्ञान विशेषों (Particulars) के पूर्ववर्ती कारण है। लेकिन इस सम्बन्ध में Aristotle का कहना है कि वस्तुस्थिति में विज्ञान विशेषों के

होकर परिवर्तित अनुभूतियाँ हैं, अब परिवर्तित होने के कारण वे विशेष वस्तुओं के कारण कभी भी नहीं हो सकते हैं। अतः Aristotle अपना निष्कर्ष देता है कि वस्तुस्थिति में विज्ञान विशेष के कारण न होकर केवल उनके अनुकरण मात्र है।

To be continued .....